Әл-Фараби университетінің 90 жылдығына
және шығыстану факультетіндегі хинди бөлімінің
25 жылдығына арналған

«ҮНДІСТАН ЖӘНЕ ЕУРАЗИЯ ЕЛДЕРІНДЕГІ ҮНДІТАНУ ЗЕРТТЕРУЛЕРІНІҢ БҮГІНІ МЕН КЕЛЕШЕГІ»

тақырыбындағы халықаралық ғылыми-тәжірибелік конференция
МАТЕРИАЛДАРЫ

अल-फ़राबी कज़ाख राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की 90वीं वर्षगांठ और
प्राच्य अध्ययन संकाय के हिंदी विभाग की 25वीं वर्षगांठ को समर्पित

"भारत और यूरेशिया में हिन्दी का वर्तमान और भविष्य"

अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय वैज्ञानिक-व्यावहारिक सम्मेलन
के लेखों का संग्रह

Сканировано с CamScanner

МАЗМҰНЫ

विषयसूची

भूमिका। बोर्ड के अध्यक्ष, रेक्टर झारासेइट कासेइतुली तुइमेबाएव का परिचयात्मक भाषण 3

बधाई भाषण 6

खंड 1: हिंदी भाषा विज्ञान की वास्तविक समस्याएं 15

डॉ. धरवेश कठेरिया।
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, भारत। *प्रचार-प्रसार में मीडिया की भूमिका* 15

प्रो. वूशामल्ला कृष्णा।
हैदराबाद केन्द्रीय विश्व विद्यालय, हैदराबाद, भारत। अंतराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में हिंदी: वर्तमान और भविष्य 18

डॉ. इंदिरा गाज़िएवा।
रूसी राजकीय मानविकि विश्वविद्यालय, मास्को, रूस। सड़क विज्ञापन की भाषा की विशेषताएं 22

प्रो. राजेंद्र घोडे।
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे, भारत। हिंदी भाषा विज्ञान का सामाजिक संदर्भ 25

डॉ. इस्काकोवा ज़ाउरे।
अल-फ़राबी कज़ाख राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, कजाखस्तान। *कज़ाख और हिंदी भाषाओं में समान और विशिष्ट बिंदु* 29

प्रो. सुधीर प्रताप सिंह।
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत। *यूरेशिया और भारत में हिंदी का वर्तमान और भविष्य* 32

प्रो. विजयकुमार रोडे।
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे, भारत। *हिंदी भाषा: इतिहास, वर्तमान और भविष्य* 39

प्रो. तबस्सुम खान।
जामिया मिल्लिया इस्लामिया,दिल्ली, भारत। *यूरेशिया और भारत में हिंदी का वर्तमान और भविष्य* 42

डॉ. सरिता शुक्ला।
एमिटी विश्वविद्यालय, भारत। *हिन्दी में विज्ञान लेखन की समस्याएँ* 46

डॉ. कमोला रहमतजोनोवा।
ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज। ताशकंद, उज्बेकिस्तान। *उज्बेकिस्तान में हिंदी भाषा और संस्कृति के प्रसार में ताशकंद राजकिय प्राच्य विद्या विश्वविदद्यालय का योगदान* 51

डॉ. मेनका त्रिपाठी।
शिक्षा सदन कॉलेज, रूड़की हरिद्वार, भारत हिन्दी। *भाषा विज्ञान की वास्तविक समस्याएं* 54

प्रो. मनीष कुमार मिश्रा, डॉ. नीलूफ़र खोजाएवा।
दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशियाई भाषा विभाग। ताशकंद राजकीय प्राच्य विश्वविद्यालय, ताशकंद, उज्बेकिस्तान। *हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक विकास: 'हिंदुस्तानी' से 'हिन्दी' तक की भाषाई राजनीति के विशेष संदर्भ में* 59

यन-वू सोन।
पीएच.डी बुसान विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, बुसान, दक्षिण कोरिया। *हिंदी पाठ्यपुस्तकों में सांस्कृतिक तत्वों निर्धारण का अध्ययन* 63

डॉ. बोता बोकुलेवा।
अल-फ़राबी कज़ाख राष्ट्रीय विश्वविद्यालय; कजाखस्तान। *हिंदी में अरबी, फारसी और तुर्क शब्दों का प्रयोग* 64

डा. श्री नरायन सिंह गौतम।
सहायक प्राध्यापक इतिहास विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर छत्तीसगढ़, **डा. सिम्बात इस्मागुलोवा।** वरिष्ठ व्याख्याता, मध्य पूर्व और दक्षिण एशिया विभाग इंडोलोजीशाखा, फराबी पुस्तकालय राष्ट्रीय विश्वविद्यालय अल्माटी कजाकिस्तान *हिन्दी भाषा के विकास में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका* 68

खंड 2-3 हिंदी भाषा के ऐतिहासिक संपर्क। हिंदी साहित्य का ऐतिहासिक विकास 72

प्रो.सुनील बाबुराव कुलकर्णी।
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, भारत। *हिंदी साहित्य का ऐतिहासिक विकास* 72

Сканировано с CamScanner

उज्बेकिस्तान में हिंदी भाषा और संस्कृति के प्रसार में ताशकंद राजकिय प्राच्य विद्या विश्वविदद्यालय का योगदान

कमोला रहमतजोनोवा
PhD (हिन्दी भाषा)
ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज
ताशकंद, उज्बेकिस्तान
kamolarahmatjonova@gmail.com

हर साल विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर एक सम्मेलन आयोजित किया जाता है। यह पूरे विश्व में हिंदी भाषा और साहित्य, भारतीय संस्कृति और दर्शन के सीखनेवालों के लिए आवश्यक है।

यह लेख उज्बेकिस्तान में हिंदी भाषा और संस्कृति के प्रसार में ताशकंद राजकिय प्राच्य विद्या विश्वविदद्यालय का योगदान को समर्पित है। इसी विश्वविद्यालय में हिंदी से संबंधित शिक्षण और अनुसंधान गतिविधियों के बारे में जानकारी प्रदान की गई है।

हिन्दी जिसके मानकीकृत रूप को मानक हिन्दी कहा जाता है, विश्व की एक प्रमुख भाषा है एवं भारत की एक राजभाषा है। केन्द्रीय स्तर पर भारत में सह-आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है। यह हिन्दुस्तानी भाषा की एक मानकीकृत रूप है जिसमें संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक है और अरबी-फ़ारसी शब्द कम हैं। हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं है क्योंकि भारत के संविधान में किसी भी भाषा को ऐसा दर्जा नहीं दिया गया है। एथनोलॉग के अनुसार हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार यह विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है।

हिन्दी और इसकी बोलियाँ सम्पूर्ण भारत के विविध राज्यों में बोली जाती हैं। भारत और अन्य देशों में भी लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। फ़िजी, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम, नेपाल और संयुक्त अरब अमीरात में भी हिन्दी या इसकी मान्य बोलियों का उपयोग करने वाले लोगों की बड़ी संख्या मौजूद है।फरवरी 2019 में अबू धाबी में हिन्दी को न्यायालय की तीसरी भाषा के रूप में मान्यता मिली।

'देशी', 'भाखा' (भाषा), 'देशना वचन' (विद्यापति), 'हिन्दवी', 'दक्खिनी', 'रेखता', 'आर्यभाषा' (दयानन्द सरस्वती), 'हिन्दुस्तानी', 'खड़ी बोली', 'भारती' आदि हिन्दी के अन्य नाम हैं जो विभिन्न ऐतिहासिक कालखण्डों में एवं विभिन्न सन्दर्भों में प्रयुक्त हुए हैं। हिन्दी, यूरोपीय भाषा-परिवार के अन्दर आती है। ये हिन्द ईरानी शाखा की हिन्द आर्य उपशाखा के अन्तर्गत वर्गीकृत है।

अत्यंत प्रचीन काल से उज्बेकिस्तान और भारत के मधुर संबंध चले आ रहे हैं जो हिंदी सीखने से और मज़बूत होंगे । भारतीय संस्कृति दुनिया में सब से पुरानी मानी जाती है। दोनों देशों के वैज्ञानिकों की भागीदारी के साथ वैज्ञानिक संगोष्ठी, सेमिनार या सम्मेलन एक परम्परा बन गई है। प्राचीन रेशम मार्ग तथा मुग़ल सम्राज्य के समय से ही भारत और उज्बेकिस्तान द्विपक्षीय संबंधों का आंनद उठाते आए है। उज्बेकिस्तान भारत का मित्र रहा है इसलिए इस क्षेत्र के साथ भारत के सम्पर्क और भारत की मध्य एशिया सम्पर्क नीति में इस देश को प्रथमिकता दी जाती है। दोनों देश आपसी सहयोग से राजनीतिक, वाणिज्यिक और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत कर रहे हैं। भारत को उज्बेकिस्तान के साथ उच्च स्तरीय राजनीतिक दौरे नियमित अन्तराल पर किए जाने चाहिए। भारत की मध्य एशिया सम्पर्क नीति को कारगर बनाने के लिए आधिकारिक चर्चा और द्विपक्षीय समझौतों के अंतर्गत व्यापार के नए विकल्पों, लोगों से लोगों के संबंधों का विस्तार पर पारस्परिक सहयोग किया जाना चाहिए।

उज्बेकिस्तान में 1947 से हिन्दी भाषा पढ़ाई जाती है। पहले मासको और लेनिनग्राद से विद्वान उज्बेकिस्तान में हिंदी सिखाने और पढ़ाने के लिए आते थे। सन् 1970 – 1950 में उज़बेकिस्तान के अपने विद्वान भी भारतविद्याविद् (Indologists) के रूप में मंच पर आने लगे। उन विद्वानों ने भारत तथा हिंदी भाषा के अनेक क्षेत्रों का अध्ययन किया था, जैसे नागिरक शास्त्र, शब्दकोश-निर्माण कला, व्याकरण और संरचनात्मक टाइपोलॅजी आदि।

प्रसन्नता की बात है कि आजकल उज्बेकिस्तान के विभिन्न क्षेत्रों और शहरों में भारतीय भाषा और संस्कृति को पढ़ाया जा रहा है। विशेष रूप से उज्बेकिस्तान की राजधानी ताशकंद में: ताशकंद राजकिय प्राच्य विद्या विश्वविदद्यालय, Uzbekistan State World Languages University तथा Lyceium under Tashkent State University of Oriental Studies, School № 24 में हिंदी

Сканировано с CamScanner

की शिक्षा दी जाती है। इसके अलावा ताशकंद में स्थित लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति केंद्र में भी हिंदी का अध्यापन चल रहा है। इसके अलावा, उज्बेकिस्तान के खोरेज़म, बुखारा, अंदिजान और फगाना क्षेत्रों में भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों में काम करना शुरू कर दिया है।

उज़्बेकिस्तान में भारतीय भाषा और संस्कृति को दो तरीके पढ़ाया जाता है। पहले दिशा में उच्च शिक्षा संस्थान और राज्य के उच्च विद्यालय और स्कूल में हिंदी भाषा, साहित्य और इतिहास पढ़ाया जाता है। साथ ही, उन छत्रों को विशेष डिप्लोमा प्रदान किए जाते हैं जिनहों ने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली है।

दूसरी दिशा में सांस्कृतिक केंद्रों द्वारा हिंदी भाषा, साहित्य और कला की शिक्षा दी जाती है। हालांकि, इस पाठ्यक्रम को पूरा करने वाले छात्रों को विशेष डिप्लोमा प्रदान नहीं किए जाते। प्रमाण पत्र जारी किया जाएगा।

सामान्य रूप में उज्बेकिस्तान में हिंदी भाषा सीखने और सिखाने में 70 वर्ष से अधिक हो चुके हैं। प्रारंभ में, भारतीय भाषाओं और साहित्य को पढ़ाने वाले विभाग को भारतीय भाषाशास्त्र विभाग कहा जाता था। पिछले वर्षों में, विभाग ने 100 से अधिक विशेषज्ञों को प्रशिक्षित किया है। यहाँ न केवल उज्बेकिस्तानी, बल्कि विदेशी भी अध्ययन करते थे। उदाहरण के लिए पोलैंड, जर्मनी, बुल्गारिया, मंगोलिया, क्यूबा और वियतनाम जैसे देशों के प्रतिनिधियों ने भी यहाँ हिन्दी का अध्ययन किया था।

ताशकंद राजकिय प्राच्य विद्या विश्वविदद्यालय में कई प्राच्य भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं। इनमें हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के अध्ययन को विशेष महत्व दिया जाता है। यहाँ केवल हिंदी ही नहीं, बल्कि भाषा के संबंध में इतिहास, साहित्य, राजनीति, अर्थशास्त्र, पर्यटन और दर्शन भी पढ़ाया जाता है। आज काल इस विश्वविद्यालय में लगभग 200 छात्र हिंदी का अध्ययन करते हैं। विश्वविद्यालय में बी ए और एम ए स्तर पर हिंदी और हिंदी से संबंधित विषय पढ़ाए जाते हैं। इस दौरान कुछ छात्रों को प्रशिक्षण के लिए भारत भी भेजा जाता है। एम ए के बाद जो हिंदी भाषा और भारतीय अध्ययन के संबंधित विषयों में रुचि रखते हैं, वे शौधकार्या लिख सकते हैं और उनको पी एच डी की उपाधि प्रदान की जाती है।

इन सालों में हमारे अध्यापकों द्वारा न सिर्फ़ हिंदी भाषा बल्कि हिंदी साहित्य, समाज शास्त्र के क्षेत्र में भी अनेकों पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। उदाहरण के लिए डॉ॰ तामारा खदजाएवा और प्रोफ़ेसर उलफत मुखिबोवा की ओर से भारितय साहित्य से संबंधित दस से ज़्यादा पुस्तकों का छापी गयी है। "वार्ता साहित्य" 2008, "भक्ति साहित्य" 2012, "भारत का साहित्य" 2016, "बाबरी काल का साहित्य" 2018, "भारत के लोगों का साहित्य" 2020 उनमें से हैं। आज काल प्रोफ़ेसर उल्फत मुहीबोवा वे इस विश्वविद्यालय के पूर्वी देशों के साहित्य एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग में काम करते हैं।

उज़्बेकिस्तान में इक्कीसवीं शताब्दी में हिंदी के अध्ययन – अध्यापन और बढ़ने के साथ हिंदी भाषा से संबंधित शोधकार्य में नयी दिशाएँ खुलने लगीं। उदाहरण के लिए 2001 में स्वार्गिय प्रोफ़ेसर अन्सारूद्दिन इब्राहिमोव ने "बाबुरनामा" में हिन्दी शब्दों का अध्ययन" विषय पर पी एच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी। यह शोधकार्य लेक्सिकोलाजी के क्षेत्र में किया गया था। आजकल इस क्षेत्र में और शोधकर्ता भी कार्य कर रहे हैं जिनमें से एक उल्लेखनीय नाम है नादिरबेक सलिम्बेकोव का जो "हिंदी भाषा में तुर्की शब्द" विषय पर काम कर रहे हैं। उस ने इस विषय से संबंधित कई निबंध भी लिखे हैं।

इक्कीसवीं शताब्दी के आगमन के साथ उज़्बेकिस्तान में हिंदी रचनाओं के अनुवाद एंव उनके अध्ययन का दौर शुरू हुआ। सन् 2019 में डा. नीलोफर खोदजाएवा ने "प्रेमचंद के रचनाओं के उज्बेकी उनुवाद की शाब्दिक विशेषताएँ" विषय पर अपना पी एच.डी. का काम किया है। उन्हों ने अपने शोधकार्य में प्रेमचंद के रचनाओं एवं उनके उज्बेकी अनुवाद की शाब्दिक तथा अर्थगत विशेषताओं की तुल्ना की है। इस के अलावा गुल्नोज़ा नज़रुलयेवा भी इस दिशा में वैज्ञानिक शोधकार्य लिख रही है। वह कृष्ण चंदर की रचनाओं में चरित्र विमर्श को जोड़कर अपने शोधकार्य का अध्ययन कर रही है। उस ने इस वैज्ञानिक कार्य से संबंधित कई लेख प्रकाशित किए हैं। नीलोफर खोदजाएवा दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशियाई भाषाओं के विभाग के प्रमुख हैं। इस विभाग में हिंदी के अलावा मलय, इंडोनेशियाई और वियतनामी भाषाएं भी पढ़ाई जाती हैं।

गुल्नोज़ा नज़रुलयेवा विश्वविद्यालय के अनुवाद सिद्धांत और अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारिता विभाग में हिंदी और अन्य अनुवाद अध्ययन पढ़ाते हैं।

भाषा सीखने-सिखाने में टाइपोलाजी का बड़ा महात्व है। इस लिए इधर के सालों में उज़्बेकिस्तान में हिन्दी तथा दूसरी भाषाओं के बीच तुलनात्मक अध्ययन होने की शूरुआत हुई है।

Сканировано с CamScanner

सन् 2005 में डा. सुराजुद्दिन नुर्मातोव ने "हिन्दी और सिन्हाली भाषाओं में संख्याओं के रूपात्मक विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर अपना पी एच.डी. का काम किया है। इस शोधकार्य में हिन्दी और सिन्हाली भाषाओं में संख्याओं का रूपात्मक विशेषताओं की दृष्टि से विश्लेषण किया गया है। हिन्दी और सिन्हाली एक ही भाषावैज्ञानिक परिवार की भाषाएँ हैं। फिर भी उन में समनताओं के साथ साथ अनेक विषमताएँ भी हैं। इतना ही नहीं डा. सुराजुद्दिन नुर्मातोव आजकल "भारतीय आर्य भाषाओं में संख्यावाचक शब्दों की व्युपत्ति एवं विकास" विषय पर डी.एस सी.की थीसिस लिख रहे हैं।

सन् 2020 में टाइपोलाजी क्षेत्र में एक और नया अध्याय खुलने से दो अलग-अलग भाषावैज्ञानिक परिवार की भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन शुरू हुआ है।उज़्बेकिस्तान में भाषाओं के अलग-अलग अंगों के तुलनात्मक अध्ययन करने वालों में पिछले दिनों डा. कमोला रख्मतजानोवा का नाम भी जुड़ गया है। डा. कमोला ने अपने शोधकार्य में हिंदी और उज़्बेकी भाषाओं का शब्द विचार (morphology) की दृषटि से तुलनात्मक अध्ययन किया है।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, यहाँ हिंदी भाषा के अतिरिक्त साहित्य, इतिहास, दर्शन, अर्थशास्त्र, राजनीति और दर्शन पर वैज्ञानिक शोध कार्य किए जाते हैं। उदाहरण के लिए पोलाटोव शेरदोर महात्मा गांधी के दार्शनिक विचारों पर एक शोधकार्य लिखा है।

इसके अलावा, इस विश्वविद्यालय में नए-नए वैज्ञानिक कार्य लिखे जा रहे हैं।

अंत में मैं कहना चाहती हूँ कि ऐसे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन विभिन्न देशों में हिब्दी भाषा के प्रसार की जानकारी देते हैं। साथ ही, ऐसे वैज्ञानिक सम्मेलन देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों को मजबूत करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. https://rajbhasha.gov.in/sites/default/files/lekh2nd_hin.pdf
2. https://hi.wikipedia.org/wiki
3. https://donate.wikimedia.org/w/index

Сканировано с CamScanner